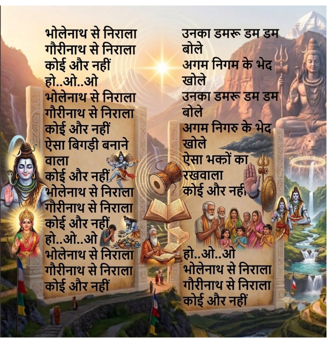

28-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम्हारी बिगड़ी को सुधारने वाला अर्थात् तकदीर बनाने वाला एक बाप है , जो तुम्हें नॉलेज देकर तकदीरवान बनाते हैं "

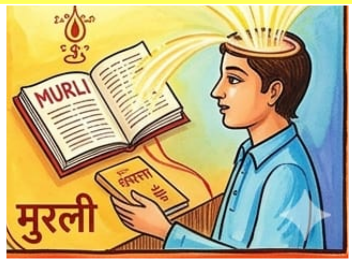

प्रश्नः तुम बच्चों की इस रूहानी भट्ठी का एक कायदा कौन सा है?

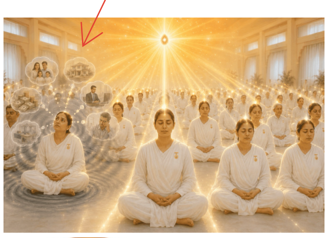

उत्तर: रूहानी भट्ठी में अर्थात् याद की यात्रा में बैठने वालों को कभी भी इधर-उधर के ख्यालात नहीं चलाने हैं, एक बाप को याद करना है। अगर बुद्धि इधर-उधर भटकती है तो झुटका खाते रहेंगे, उबासी देंगे, इससे वायुमण्डल खराब होता है। अपना ही नुकसान करते हैं।

गीत:-दिल का सहारा टूट न जाये... Click

तेरे लिए मैं जहाँ से टकराऊँगा
सब कुछ खोके तुझको ही पाउँगा
दिल बन के मैं दिल धडकाऊँगा
मैं तेरा बन जाऊँगा

सोंह तेरी मैं क़सम यही खाऊँगा
कित्ते वादेया नू उमराँ निभाऊँगा
तुझे हर वारी (हर कल्प में)
अपणा बनाऊँगा
मैं तेरा बन जाऊँगा...

चाहे सारी की सारी दुनिया रूठे तो रूठे ...
मुझे तो बस एक तू चाहिए...

लखाँ तों जुदा मैं होया तेरे ख़ातिर
तू ही मंज़िल, दिल तेरा मुसाफ़िर

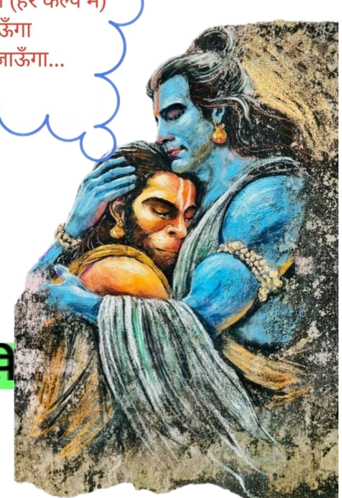

Points: ज्ञान योग धारणा से

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने गीत के दो अक्षर सुने। बच्चों को सावधानी मिलती है। इस समय जो भी हैं सबकी तकदीर बिगड़ी हुई है - सिवाए तुम ब्राह्मणों के। तुम्हारी अब बिगड़ी से सुधर रही है। बाप को कहा ही जाता है तकदीर बनाने वाला। तुम जानते हो शिवबाबा कितना मीठा है। बाबा अक्षर बड़ा मीठा है। बाप से सब आत्माओं को वर्सा मिलता है। लौकिक बाप से बच्चों को वर्सा मिलता है, बच्ची को नहीं। यहाँ बच्चा वा बच्ची सब वर्से के हकदार हैं। बाप पढ़ाते हैं आत्माओं को अर्थात् अपने बच्चों को। आत्मा समझती है हम सब ब्रदर्स हैं। बरोबर ब्रदरहुड कहा जाता है ना। एक भगवान के बच्चे हैं फिर इतना लड़ते झगड़ते क्यों? सब आपस में लड़ते ही रहते हैं। अनेक धर्म, अनेक मत हैं और मुख्य बात तो रावण राज्य में लड़ाई ही चलती है क्योंकि विकारों की प्रवेशता है। काम विकार पर भी कितना लड़ाई झगड़ा होता है। ऐसे बहुत राजाओं ने लड़ाई की है। काम के लिए बहुत लड़ते हैं। कितने खुश होते हैं। कोई के साथ दिल होती है तो मार भी देते हैं।

चढ़ाओ नशा...

ईश्वर अल्लाह तेरे जहाँ में
नफ़रत क्यों है जंग है क्यों
तेरा दिल तो इतना बड़ा है
इन्साँ का दिल तंग है क्यों) -२

क़दम क़दम पर सरहद क्यों है
सारी ज़मीं जो तेरी है
सूरज के फेरे करती है
फिर भी कितनी अंधेरी है
इस दुनिया के दामन पर
इन्साँ के लहू का रंग है क्यों

(ईश्वर अल्लाह तेरे जहाँ में
नफ़रत क्यों है, जंग है क्यों
तेरा दिल तो इतना बड़ा है
इन्साँ का दिल तंग है क्यों) -२

गूँज रही हैं कितनी चीखें
प्यार की बातें कौन सुने
टूट रहे हैं कितने सपने
इनके टुकड़े कौन चुने
दिल के दरवाज़ों पर ताले
तालों पर ये ज़ंग है क्यों

(ईश्वर अल्लाह तेरे जहाँ में
नफ़रत क्यों है, जंग है क्यों
तेरा दिल तो इतना बड़ा है
इन्सां का दिल तंग है क्यों) -२

Example

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Refer last page for What श्रीमद् भगवद् गीता Says about काम विकार

काम महाशत्रु है। क्रोध वाले को तो क्रोधी ही कहेंगे। लोभ वाले को लोभी कहेंगे। लेकिन जो कामी हैं उनके बहुत नाम रखे हुए हैं इसलिए कहा जाता है - अमृत छोड़ विष काहे को खाए। शास्त्रों में अमृत नाम लिख दिया है। दिखाते हैं सागर मंथन किया तो अमृत निकला। कलष लक्ष्मी को दिया। कितनी कहानियां हैं। इसमें भी बड़े ते बड़ी बात है सर्वव्यापी की, गीता का भगवान कौन? और पतित-पावन कौन? प्रदर्शनी में मुख्य इन्हीं चित्रों पर समझाया जाता है। पतित-पावन, ज्ञान का सागर और उनसे निकली हुई ज्ञान गंगायें वा पानी की नदी वा सागर? कितनी अच्छी-अच्छी बातें समझाई जाती हैं। बाप बैठ समझाते हैं - मीठे-मीठे बच्चों तुमको किसने पावन बनाया? बिगड़ी को सुधारने वाला कौन है? वह पतित-पावन कब आते हैं? यह खेल कैसे बना हुआ है? कोई भी नहीं जानते हैं। बाप को कहा ही जाता है नॉलेजफुल, ब्लिसफुल, पीसफुल। गाया भी जाता है - बिगड़ी को बनाने वाला एक। यह तो समझने में आता है - बरोबर रावण हमारी बिगाड़ते हैं। यह खेल है हार

But we know, How Lucky & Great we are..!

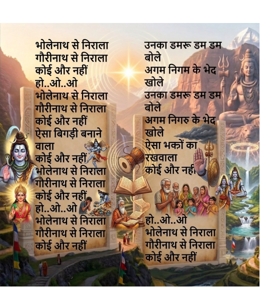

चढ़ाओ नशा...

जीत का। रावण को भी तुम जानते हो जिसको भारतवासी वर्ष-वर्ष जलाते हैं। यह भारत का दुश्मन है। भारत में ही हर वर्ष जलाते हैं। उनसे पूछो कब से जलाते आते हो? तो कहेंगे यह तो अनादि चला आता है, जब से सृष्टि शुरू होती है। शास्त्रों में जो पढ़ा सत-सत करते आते हैं। मुख्य भूल है ईश्वर को सर्वव्यापी कहना। बाप यह नहीं कहते कि यह किसकी भूल है! यह ड्रामा में नूँध है। हार जीत का खेल है। माया से हारे हार, माया से जीते जीत। माया से कैसे हार खाते हैं, वह भी समझाया जाता है। पूरा आधाकल्प रावणराज्य चलता है। एक सेकेण्ड का भी फर्क नहीं हो सकता। रामराज्य की स्थापना और रावण राज्य का विनाश। अपने समय पर एक्यूरेट चलते हैं। सतयुग में तो लंका होती नहीं। वह तो बुद्ध धर्म का खण्ड है। पढ़े लिखे की बुद्धि में रहता है, लण्डन इस तरफ है, अमेरिका इस तरफ है। पढ़ाई से बुद्धि का ताला खुलता है, रोशनी आती है। इसको ज्ञान का तीसरा नेत्र कहा जाता है। बुढ़ियां बहुत बातें समझ न सकें। इन्हों को एक मुख्य बात धारण

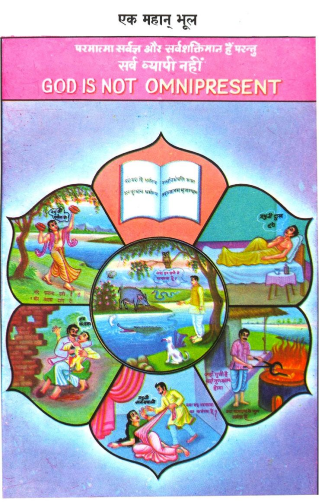

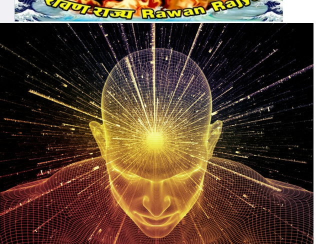

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

करनी है, जो ही अन्त में काम आती है। मनुष्य शास्त्र तो बहुत पढ़ते हैं। पिछाड़ी में फिर भी एक अक्षर कह देते हैं कि राम-राम कहो। ऐसे नहीं कहते शास्त्र सुनाओ, वेद सुनाओ। पिछाड़ी में कहेंगे राम को याद करो। जो जास्ती समय जिस चिंतन में रहते हैं, अन्त में भी वह याद आ जाता है। अभी विनाश तो सबका होना है। तुम जानते हो सब किसको याद करेंगे? कोई श्रीकृष्ण को, कोई अपने गुरू को याद करेंगे। कोई अपने देह के सम्बन्धियों को याद करेंगे। देह को याद किया, खेल खलास। यहाँ तुमको एक ही बात समझाई जाती है कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो। चार्ट रखो कि हम कितना याद करते हैं। जितना याद करेंगे, पावन होते जायेंगे। ऐसे नहीं कि गंगा में स्नान करने से पावन बनेंगे। आत्मा की बात है ना। आत्मा ही पतित, आत्मा ही पावन बनती है ना। बाप ने समझाया है - आत्मा एक स्टार बिन्दी है। भृकुटी के बीच में रहती है। कहते हैं आत्मा स्टार अति सूक्ष्म है। तुम बच्चे ही इन बातों को समझ सकते हो। बाप कहते हैं मैं

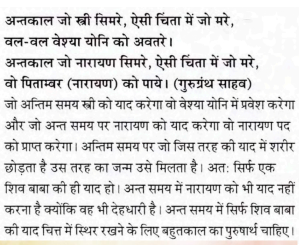
अन्तकाल जो स्त्री सिमरे, ऐसी चिंता में जो मरे,
वल-वल वेश्या योनि को अवतरे।
अन्तकाल जो नारायण सिमरे, ऐसी चिंता में जो मरे,
वो पिताम्बर (नारायण) को पाये। (गुरुग्रंथ साहब)
जो अन्तिम समय स्त्री को याद करेगा वो वेश्या योनि में प्रवेश करेगा और जो अन्त समय पर नारायण को याद करेगा वो नारायण पद को प्राप्त करेगा। अन्तिम समय पर जो जिस तरह की याद में शरीर छोड़ता है उस तरह का जन्म उसे मिलता है। अतः सिर्फ एक शिव बाबा की ही याद हो। अन्त समय में नारायण को भी याद नहीं करना है क्योंकि वह भी देहधारी है। अन्त समय में सिर्फ शिव बाबा की याद चित्त में स्थिर रखने के लिए बहुतकाल का पुरुषार्थ चाहिए।

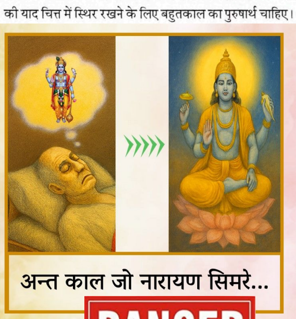

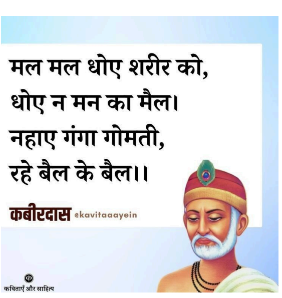

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

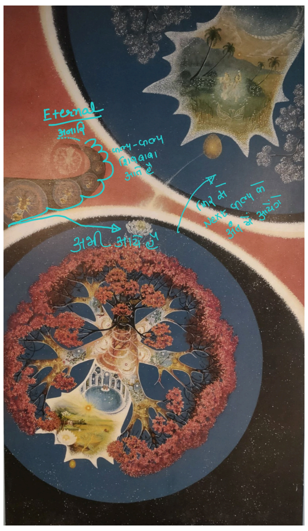

28-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति " " मधुबन

कल्प के संगमयुगे आता हूँ। उन्होंने फिर कल्प अक्षर छोड़ युगे-युगे अक्षर लिख दिया है। तो मनुष्यों ने उल्टा समझ लिया है। मैंने कहा है कि कल्प-कल्प संगमयुगे आता हूँ, घोर अन्धियारा और घोर सोझरे के संगम पर। बाकी युगे-युगे आने की तो दरकार ही नहीं। सीढ़ी उतरते ही आते हैं।

जब पूरे 84 जन्म की सीढ़ी उतरते हैं तब बाप आते हैं। यह ज्ञान सारी दुनिया के लिए है।

संन्यासी लोग तो कह देते हैं इन्हों के चित्र सब कल्पना हैं। परन्तु कल्पना की तो इसमें कोई बात ही नहीं। यह सबको समझाया जाता है, नहीं तो मनुष्यों को कैसे पता पड़े इसलिए यह चित्र बनाये गये हैं। यह प्रदर्शनी देश-देशान्तर में ढेर होती रहेंगी।

बाप कहते हैं बहुत भारत-वासी बच्चे हैं। हैं तो सब बच्चे ना। अनेक धर्मों का यह झाड़ है। बाप बैठ समझाते हैं - यह सब काम चिता पर बैठ जल मरे हैं।

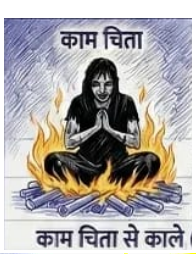

सतयुग में जो पहले-पहले आते हैं, वही फिर पहले-पहले द्वापर से लेकर काम अग्नि में जलते हैं इसलिए काले हो गये हैं। अभी सबकी सद्गति होनी है। तुम निमित्त बनते हो। तुम्हारे

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

पिछाड़ी सबकी सद्गति होनी है। बाप कितना सहज रीति समझाते हैं। कहते हैं सिर्फ बाप को याद करो। आत्मा ने ही दुर्गति को पाया है। आत्मा पतित बनने से शरीर भी ऐसा मिलता है। आत्मा को पावन बनाने की युक्ति बाप बिल्कुल सहज बताते हैं।

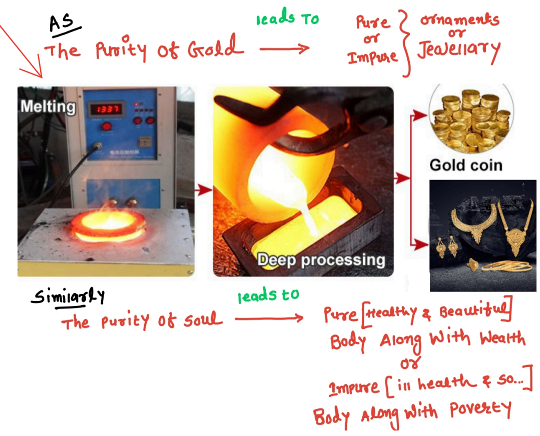

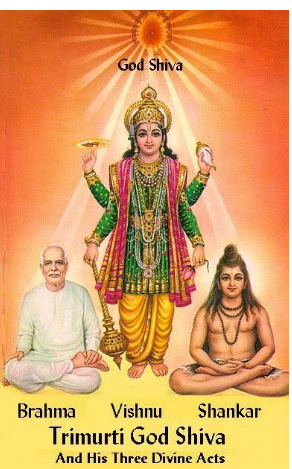

त्रिमूर्ति के चित्र में ब्रह्मा का चित्र देख मनुष्य हाय-हाय मचा देते हैं। इनको ब्रह्मा क्यों कहते हो? ब्रह्मा तो सूक्ष्मवतन वासी देवता है, यहाँ कहाँ से आया? यह दादा तो नामीग्रामी था। अखबारों में सब जगह पड़ा था, एक जौहरी कहता है मैं श्रीकृष्ण हूँ, हमको 16108 रानियां चाहिए। बड़ा हंगामा मच गया था, भगाने का। अब एक-एक से माथा कौन मारे। इतने ढेर मनुष्य हैं। आबू में भी कोई आते हैं तो उनको झट कहते हैं अरे ब्रह्माकुमारियों के पास जाते हो! वह तो जादू कर देती हैं। स्त्री-पुरुष को भाई-बहिन बना देती हैं। लम्बी चौड़ी बात बताकर

माथा खराब कर देते हैं। बाप कहते हैं तुम मुझे ज्ञान सागर वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी कहते हो। वर्ल्ड आलमाइटी अर्थात् सर्वशक्तिमान्, सब वेदों शास्त्रों आदि को जानने वाला। बड़े विद्वान को भी अथॉरिटी कहते हैं क्योंकि वह सब वेदों, शास्त्रों आदि को पढ़ते हैं फिर बनारस में जाकर टाइटिल ले आते हैं। महा-महोपाध्याय, श्री श्री 108 सरस्वती यह सब टाईटिल्स वहाँ ही मिलते हैं। जो बहुत होशियार होते हैं, उनको बड़ा टाइटिल मिलता है। शास्त्रों में जनक के लिए लिखा हुआ है। उसने कहा कि सच्चा ब्रह्म ज्ञान कोई हमको सुनाये। अब ब्रह्म ज्ञान तो है नहीं। बातें सारी यहाँ की हैं। कहानी बड़ी बना दी है। शंकर पार्वती की भी कहानी लिखी हुई है। कितनी कहानियां बैठ बनाई हैं। शंकर ने पार्वती को कथा सुनाई, वास्तव में था शिव उन्होंने फिर शंकर पार्वती का नाम दे दिया है। भागवत आदि में यह सब इस समय की बात है। फिर कहानी में बताते हैं, उनको ख्याल आया - राजा को यह ज्ञान जाकर दूँ। बाप भी समझाते हैं - राजाओं को जाकर ज्ञान दो। तुम ही

Raja Janak & Muni Ashtavakra

ये पक्का समझ लो..

सूर्यवंशी थे फिर चन्द्रवंशी, वैश्य वंशी, शूद्रवंशी बनें। तुम्हारी राजधानी ही चट हो गई है। अब फिर सूर्यवंशी राजधानी लेना हो तो पुरुषार्थ करो। राजयोग सिखाने वाला बाबा आया हुआ है। फिर आकर बेहद का स्वराज्य लो। राजाओं के पास भी बहुत चिट्ठियां जाती हैं फिर उनको मिलती थोड़ेही हैं। उनके प्राइवेट सेक्रेटरी चिट्ठियां देखते हैं। कितनी चिट्ठियां फेंक देते हैं। कोई में ऐसी जरूरी बात होती है तो उनको दिखा देते हैं। कहते हैं - अष्टापा ने जनक को सेकेण्ड में जीवनमुक्ति का साक्षात्कार कराया। यह भी अब है। अब बाप कितना अच्छी तरह बैठ तुमको समझाते हैं। जो समझने वाले नहीं हैं, वह यहाँ-वहाँ देखते रहेंगे।

Raja Janak & Muni Ashtavakra

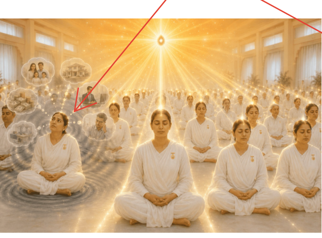

बाबा झट समझ जाते हैं - उनकी बुद्धि में कुछ बैठता नहीं है। बाबा चारों तरफ देखते भी हैं - सभी अच्छी तरह सुनते हैं। इनकी बुद्धि कहाँ भटकती रहती है। उबासी देते रहते हैं। ज्ञान बुद्धि में नहीं बैठेगा तो झुटके खाते रहेंगे, नुकसान हो जाता है। कराची में इन बच्चों की भट्ठी थी। कोई झुटका खाता था तो फिर झट बाहर निकाला

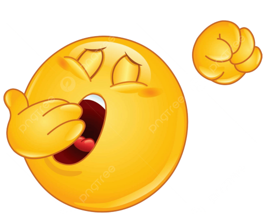

जाता था। अपने ही बैठते थे। बाहर का कोई आता नहीं था। शुरू में इन्हों का बड़ा पार्ट चला है। लम्बी हिस्ट्री है। शुरू में तो बच्चियां बहुत ध्यान में चली जाती थी। अभी तक भी कहते रहते हैं जादू है। परमपिता परमात्मा को जादूगर कहते हैं ना। शिवबाबा देखते हैं - इनका बहुत प्रेम है, तो देखने से ही झट ध्यान में चले जाते हैं। वैकुण्ठ तो भारत-वासियों को बहुत प्यारा है। कोई मरता है तो भी कहते हैं वैकुण्ठवासी हुआ, स्वर्गवासी हुआ। अभी यह तो है ही नर्क। सब नर्कवासी हैं, तब तो कहते हैं फलाना स्वर्गवासी हुआ। परन्तु स्वर्ग में तो कोई जाता ही नहीं है। अभी सिर्फ यह तुम जानते हो हम स्वर्गवासी थे फिर 84 जन्म ले नर्कवासी बन गये हैं। अब फिर बाबा स्वर्गवासी बना रहे हैं। स्वर्ग में है राजधानी। राजधानी में बहुत पद हैं। पुरुषार्थ कर नर से नारायण बनना है। तुम जानते हो यह मम्मा बाबा भविष्य में लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। अभी पुरुषार्थ कर रहे हैं, इसलिए कहा जाता है फालो मदर-फादर। जैसे यह पुरुषार्थ करते हैं, तुम भी करो। यह भी याद में रहते हैं, स्वदर्शन चक्रधारी

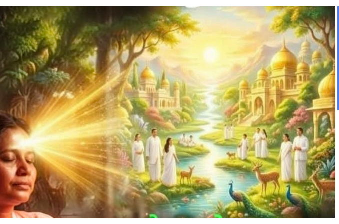

बनते हैं। तुम बाप को याद करो और वर्से को याद करो। त्रिकालदर्शी बनो। तुमको इस सारे चक्र का ज्ञान है, इसमें तत्पर रहो, औरों को समझाते रहो। इस सर्विस में ही लगे रहेंगे तो और कोई धन्धा आदि याद नहीं पड़ेगा। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) सतयुग में ऊंच पद पाने के लिए मात-पिता को पूरा-पूरा फालो करना है। उनके समान पुरुषार्थ करना है। सेवा में तत्पर रहना है। एकाग्र हो पढ़ाई करनी है।

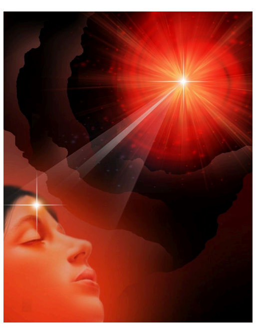

2) याद का सच्चा-सच्चा चार्ट रखना है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है, देह वा देहधारियों को याद नहीं करना है।

28-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान: अपने हाइएस्ट पोजीशन में स्थित रहकर हर संकल्प, बोल और कर्म करने वाले सम्पूर्ण निर्विकारी भव

सम्पूर्ण निर्विकारी अर्थात् किसी भी परसेन्ट में कोई भी विकार तरफ आकर्षण न जाए, कभी उनके वशीभूत न हों।

हाइएस्ट पोजीशन वाली आत्मायें कोई साधारण संकल्प भी नहीं कर सकती।

तो जब कोई भी संकल्प वा कर्म करते हो तो चेक करो कि जैसा ऊंचा नाम वैसा ऊंचा काम है?

अगर नाम ऊंचा, काम नीचा तो नाम बदनाम करते हो इसलिए लक्ष्य प्रमाण लक्षण धारण करो तब कहेंगे सम्पूर्ण निर्विकारी अर्थात् होलीएस्ट आत्मा।

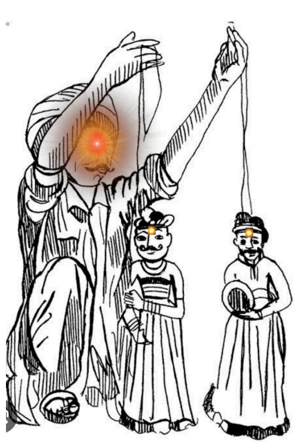

स्लोगन:- कर्म करते करन-करावनहार बाप की स्मृति रहे तो स्व-पुरुषार्थ और योग का बैलेन्स ठीक रहेगा।

Points:

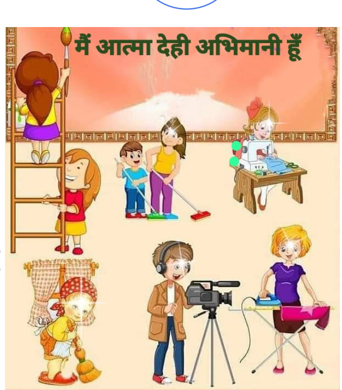

धारणा **सेवा** **M.imp.**

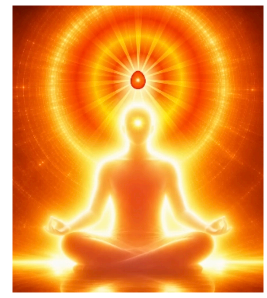

ये अव्यक्त इशारे -

ज्वालास्वरूप स्थिति में रह शक्तिशाली याद का अनुभव करो

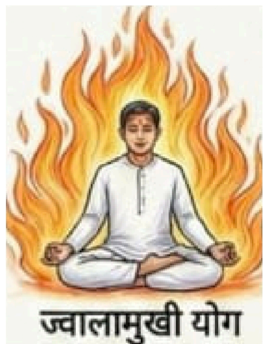

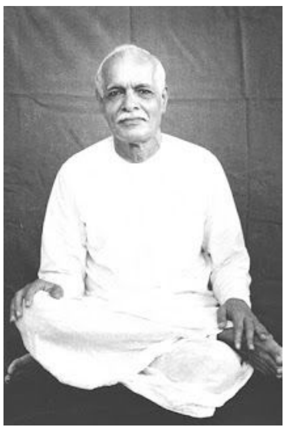

इस कलियुगी तमोप्रधान जड़जड़ीभूत वृक्ष की दुर्दशा देखते हुए ब्रह्मा बाप को संकल्प आता है कि अभी-अभी बच्चों के तपस्वी रूप द्वारा, योग अग्नि द्वारा इस पुराने वृक्ष को भस्म कर दें।

परन्तु इसके लिए संगठित रूप में फुलफोर्स से योग ज्वाला प्रज्जवलित चाहिए।

तो ब्रह्मा बाप के इस संकल्प को साकार में लाओ।

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans जून 26 → Click

All अव्यक्त इशारे जून 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

अमृतवेला

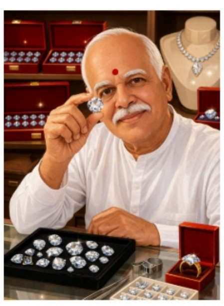

11.5 रोज़ अपने सम्पर्क वाली आत्माओं पर संकल्प द्वारा नज़र दौड़ाओ :

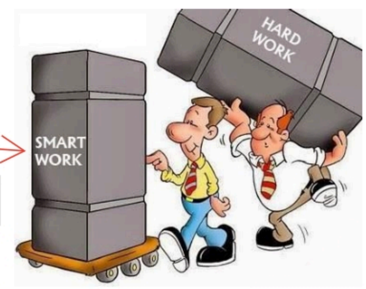

संकल्पों द्वारा ईश्वरीय सेवा करना — यह भी सेवा का श्रेष्ठ और नया तरीका है। जैसे जवाहरी होता है तो रोज़ सुबह को दुकान खोलते ही अपने हर रत्न को चैक करता कि साफ़ हैं, चमक ठीक है, ठीक जगह पर रखे हुए हैं, वैसे **रोज़ अमृतवेले अपने सम्पर्क में आने वाली आत्माओं पर संकल्प द्वारा नज़र दौड़ाओ।** जितना आप उन्हों को संकल्प से याद करेंगे, उतना वह संकल्प उन्हों के पास पहुँचेगा और वह कहेंगे कि हमने भी बहुत वारी आपको याद किया था। इस प्रकार सेवा के नये-नये तरीके अपनाते आगे बढ़ते जाओ। हर मास सम्पर्क वाली आत्माओं का विशेष कोई प्रोग्राम रखो, स्नेह मिलन रखो, अनुभव की लेन-देन वा मनोरंजन का प्रोग्राम रखो। किसी-न-किसी तरह से बुलाकर सम्पर्क बढ़ाओ। यह नहीं सोचो कि दो निकले या तीन निकले। एक भी निकले तो भी अच्छा, एक ही दीपक दीपमाला तैयार कर देगा।

← most optimistic Approach of Sweet बाबा

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः॥

अर्जुन बोले—हे कृष्ण! तो फिर यह मनुष्य स्वयं न चाहता हुआ भी बलात् लगाये हुएकी भाँति किससे प्रेरित होकर पापका आचरण करता है?॥ ३६॥

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥

श्रीभगवान् बोले—रजोगुणसे उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है, यह बहुत खानेवाला अर्थात् भोगोंसे कभी न अघानेवाला और बड़ा पापी है, इसको ही तू इस विषयमें वैरी जान॥ ३७॥

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्॥

जिस प्रकार धूएँसे अग्नि और मैलसे दर्पण ढका जाता है तथा जिस प्रकार जेरसे गर्भ ढका रहता है, वैसे ही उस कामके द्वारा यह ज्ञान ढका रहता है॥ ३८॥

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च॥

और हे अर्जुन! इस अग्निके समान कभी न पूर्ण होनेवाले कामरूप ज्ञानियोंके नित्य वैरीके द्वारा मनुष्यका ज्ञान ढका हुआ है॥ ३९॥

Enemy Forever

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम्॥

इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि—ये सब इसके वासस्थान कहे जाते हैं। यह काम इन मन, बुद्धि और इन्द्रियोंके द्वारा ही ज्ञानको आच्छादित करके जीवात्माको मोहित करता है॥ ४०॥

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्॥

इसलिये हे अर्जुन! तू पहले इन्द्रियोंको वशमें करके इस ज्ञान और विज्ञानका नाश करनेवाले महान् पापी कामको अवश्य ही बलपूर्वक मार डाल॥ ४१॥

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः॥

इन्द्रियोंको स्थूल शरीरसे पर यानी श्रेष्ठ, बलवान् और सूक्ष्म कहते हैं; इन इन्द्रियोंसे पर मन है, मनसे भी पर बुद्धि है और जो बुद्धिसे भी अत्यन्त पर है वह आत्मा है॥ ४२॥

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्॥

इस प्रकार बुद्धिसे पर अर्थात् सूक्ष्म, बलवान् और अत्यन्त श्रेष्ठ आत्माको जानकर और बुद्धिके द्वारा मनको वशमें करके हे महाबाहो! तू इस कामरूप दुर्जय शत्रुको मार डाल॥ ४३॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

Formidable Enemy

~~०~~

Biggest enemy of soul/human Being is not any person/religion, but the 'Kaam vikar' is.

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥

विषयोंका चिन्तन करनेवाले पुरुषकी उन विषयोंमें आसक्ति हो जाती है, आसक्तिसे उन विषयोंकी कामना उत्पन्न होती है और कामनामें विघ्न पड़नेसे क्रोध उत्पन्न होता है॥ ६२॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

क्रोधसे अत्यन्त मूढ़भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़भावसे स्मृतिमें भ्रम हो जाता है, स्मृतिमें भ्रम हो जानेसे बुद्धि अर्थात् ज्ञानशक्तिका नाश हो जाता है और बुद्धिका नाश हो जानेसे यह पुरुष अपनी स्थितिसे गिर जाता है॥ ६३॥

Soul

विषयो के चिंतन से आसक्ति
आसक्ति से कामना/काम
कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध
क्रोध से *अत्यंत* मूढ़भाव
मूढ़भाव से स्मृतिमें भ्रम
स्मृति में भ्रम से बुद्धि अर्थात ज्ञानशक्ति का नाश
बुद्धि का नाश हो जाने से पुरुष(आत्मा) अपनी स्थिति से गिर जाता है।

गीता अध्याय 2 - श्लोक 62,63

So, ultimate Root cause as per revered "Geeta" is

Kaam vikar